

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 10 — दो वृक्षों का उद्धार

4 October 2026



जब बालक कृष्ण अपने पीछे ऊखल घसीटते हुए दो यमलार्जुन वृक्षों के बीच से निकलते हैं, तब दोनों विशाल वृक्ष जड़ से उखड़कर धराशायी हो जाते हैं — और उनमें से दो तेजस्वी दिव्य पुरुष मुक्त हो जाते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह दसवाँ अध्याय पिछली लीला को पूर्ण करता है: माँ के प्रेम से ऊखल में बँधे बालक कृष्ण अब आँगन में निकलकर वृक्षों के शरीर में चिरकाल से बन्दी दो आत्माओं का उद्धार करते हैं। राजा परीक्षित पूछते हैं कि कुबेर के इन दो पुत्रों — नलकूवर और मणिग्रीव — ने ऐसा कौन-सा कर्म किया था जिससे उन्हें नारद का शाप मिला, और शुकदेवजी धन और मद के अंधेपन तथा नारद के कठोर वचनों में छिपे आशीर्वाद पर एक गहन उपदेश से उत्तर देते हैं। फिर वह महान् लीला घटित होती है: कृष्ण दोनों यमलार्जुन वृक्षों के बीच ऊखल घसीटते हैं, उन्हें भारी शब्द के साथ जड़ से उखाड़ देते हैं, और वे दोनों दिव्य पुरुष, विनम्र होकर, अपने हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाकर घर लौटने से पूर्व उनके चरणों में स्तुति अर्पित करते हैं।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 10 (दशम अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: नलकूवर और मणिग्रीव का उद्धार
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: गोकुल, व्रज में नन्द का आँगन; कथा के भीतर कैलास का दिव्य उपवन
- केंद्रीय विषय: कुबेर के दो पुत्रों के शाप का कारण; धन के अंधेपन और सरलता के आशीर्वाद पर नारद का उपदेश; उनका शाप और उसमें छिपी कृपा; और कृष्ण द्वारा यमलार्जुन वृक्षों का उखाड़ना जो दोनों दिव्य पुरुषों को मुक्त करता है
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 10, श्लोक 1-43
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

नवें अध्याय में माता यशोदा ने चंचल शिशु कृष्ण को उस रस्सी से ऊखल में बाँधा जो सदा दो अंगुल छोटी पड़ती रही, जब तक प्रभु ने स्वयं को बँधने न दिया। अकेले छोड़े जाने पर उन्होंने आँगन में खड़े दो विशाल यमलार्जुन वृक्षों की ओर दृष्टि डाली — जो कभी नारद के शाप से वृक्ष बने कुबेर के पुत्र नलकूवर और मणिग्रीव थे। यह अध्याय उनकी कथा और उनके उद्धार का वर्णन करता है।

परीक्षित का प्रश्न

यह सुनकर कि वे दो वृक्ष कभी सजीव प्राणी थे, राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से उनके शाप का कारण पूछा। उन दोनों ने ऐसा कौन-सा निन्दनीय कर्म किया था जिससे कोमल हृदय देवर्षि नारद तक अप्रसन्न हो गए, और वे उनके कठोर वचनों के भागी कैसे बने? शुकदेवजी ने उनकी कथा सुनाकर उत्तर दिया।

धन और मद का अधापन

नलकूवर और मणिग्रीव देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर के पुत्र थे और भगवान् शिव के अनुचर बन गए थे। अपने धन और पद के अभिमान में एक दिन वे दिव्य मन्दाकिनी के तट पर कैलास के रमणीय उपवन में विहार कर रहे थे। मादक वारुणी मदिरा पीकर, आँखें घुमाते हुए, वे फूलों से भरे वन में घूमते रहे और गंगा के जल में उतरकर युवतियों के समूह के साथ ऐसे क्रीड़ा करने लगे जैसे हथिनियों के बीच दो हाथी।



कैलास के दिव्य उपवन में देवर्षि नारद कुबेर के दो अभिमानी पुत्रों को देखते हैं, जो मदिरा और धन के मद में अंधे होकर गंगा के तट पर देवांगनाओं के साथ विहार कर रहे हैं
(श्लोक 3-6)।

संयोग से देवर्षि नारद वहाँ आ पहुँचे और तुरन्त समझ गए कि दोनों मदिरा से अंधे हैं। ऋषि को देखकर लज्जित और शाप के भय से भीत स्त्रियों ने शीघ्र ही अपने वस्त्र पहन लिए — किन्तु कुबेर के दोनों पुत्र इतने उन्मत्त थे कि उन्हें यह भी भान न रहा कि वे निर्वस्त्र हैं, और उन्होंने वस्त्र न पहने। मदिरा और धन के मद से अंधे उन दोनों को देखकर नारद ने करुणावश और उन्हें आशीर्वाद देने के लिए ऐसे वचन कहे जो एक साथ फटकार भी थे और उपदेश भी।

श्रीनारद उवाच

न ह्यन्यो जुषतो जोष्यान्बुद्धिभ्रंशो रजोगुणः ।

श्रीमदादाभिजात्यादिर्यत्र स्त्री द्यूतमासवः ॥ ८ ॥

śrī-nārada uvāca na hy anyo juṣato joṣyān buddhi-bhramśo rajo-guṇaḥ śrī-madād ābhijātyādir yatra strī dyūtam āsavaḥ

अर्थ: नारद ने कहा: भोग्य पदार्थों में लिप्त रहने वाले की बुद्धि को धन और उच्च कुल के अभिमान से उत्पन्न रजोगुण जितना भ्रष्ट करता है, उतना और कोई नहीं — जहाँ स्त्री, द्यूत और मदिरा हो। (स्कन्ध 10, अध्याय 10, श्लोक 8)

फिर ऋषि ने दीनता और सरलता के छिपे गुण का उपदेश दिया। धन के मद से अंधे व्यक्ति के लिए, उन्होंने कहा, दरिद्रता नेत्रों का सर्वोत्तम अंजन है: दरिद्र व्यक्ति दूसरों को अपने समान देखकर उनकी पीड़ा को अपनी पीड़ा समझता है, जैसे काँटे से बिंधा व्यक्ति दूसरे बिंधे व्यक्ति की व्यथा जानता है। अभिमान और अहंकार से रहित, हर मद से मुक्त, सरल जन के कष्ट ही उसकी सर्वोच्च तपस्या बन जाते हैं; उसकी इन्द्रियाँ क्षीण हो जाती हैं और हिंसा की प्रवृत्ति भी शान्त हो जाती है। सन्त, जो सबके प्रति समान और केवल मुकुन्द के चरणों के अभिलाषी हैं, स्वभावतः विनम्र और दीन जनों का संग करते हैं — फिर अभिमानी धनवानों की, जो असत् का आश्रय लेते हैं, चिन्ता में समय क्यों नष्ट किया जाए?

शाप और उसमें छिपी कृपा

फिर नारद ने वह दण्ड सुनाया जो वस्तुतः एक कृपा था। लोकपाल कुबेर के ये दोनों पुत्र, अन्धकार में डूबे और इतने उन्मत्त कि उन्हें निर्वस्त्र होने तक का भान न रहा, इतने नीचे गिर गए थे कि वे स्थावर बनने — वृक्ष रूप में जन्म लेने — के योग्य थे, ताकि वे फिर कभी ऐसे मद में न गिरें। किन्तु शाप में भी ऋषि ने अपनी कृपा रख दी: उनके आशीर्वाद से उनकी स्मृति बनी रहेगी, और सौ दिव्य वर्षों तक वृक्ष रूप में खड़े रहकर वे भगवान् वासुदेव का प्रत्यक्ष सान्निध्य पाएँगे, और अन्ततः अपने में शुद्ध भक्ति जगाकर स्वर्गलोक लौटेंगे।

यदिमौ लोकपालस्य पुत्रौ भूत्वा तमःप्लुतौ ।

न विवाससमात्मानं विजानीतः सुदुर्मदौ ॥ २० ॥

अतोऽर्हतः स्थावरतां स्यातां नैवं यथा पुनः ।

स्मृतिः स्यान्मत्प्रसादेन तत्रापि मदनुग्रहात् ॥ २१ ॥

वासुदेवस्य सान्निध्यं लब्ध्वा दिव्यशरच्छते ।

वृत्ते स्वर्लोकतां भूयो लब्धभक्ती भविष्यतः ॥ २२ ॥

*yad imau loka-pālasya putrau bhūtvā tamaḥ-plutau na vivāsasam ātmānaṁ vijānītaḥ
sudurmadau ato 'rhataḥ sthāvaratām syātām naivaṁ yathā punaḥ smṛtiḥ syān mat-prasādena
tatrāpi mad-anugrahāt vāsudevasya sānnidhyaṁ labdhvā divya-śarac-chate vṛtte svarlokatām
bhūyo labdha-bhakti bhaviṣyataḥ*

अर्थ: चूँकि लोकपाल कुबेर के ये दोनों पुत्र, तमोगुण में डूबे और अत्यन्त उन्मत्त, यह भी नहीं जानते कि वे निर्वस्त्र खड़े हैं, अतः वे स्थावर वृक्ष बनने के योग्य हैं, जिससे वे फिर इस प्रकार न गिरें। तथापि मेरी कृपा से उनकी स्मृति बनी रहेगी; और मेरी कृपा से, सौ दिव्य वर्षों के पश्चात्, भगवान् वासुदेव का सान्निध्य पाकर वे प्रेममयी भक्ति सहित पुनः स्वर्गलोक लौट जाएँगे। (स्कन्ध 10, अध्याय 10, श्लोक 20-22)

ऐसा कहकर नारद नारायण-आश्रम की ओर चले गए, और वे दोनों नन्द के आँगन में खड़े यमलार्जुन वृक्ष बन गए — उन दीर्घ वर्षों तक उस प्रभु की प्रतीक्षा में, जो अब यशोदा के लाला रूप में प्रकट हुए थे।

यमलार्जुन वृक्षों का गिरना

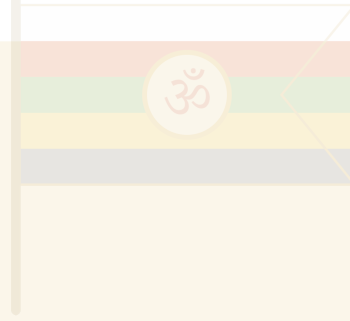
महान् भक्त-ऋषि के वचन को सत्य करने के लिए प्रभु ऊखल घसीटते हुए धीरे-धीरे उस स्थान की ओर बढ़े जहाँ यमलार्जुन वृक्ष खड़े थे। ‘देवर्षि मुझे परम प्रिय हैं,’ उन्होंने मन में सोचा; ‘चूँकि ये दोनों कुबेर के पुत्र हैं, मैं ठीक वही करूँगा जो उस महात्मा ने कहा था।’ तब बालक दोनों वृक्षों के बीच से निकले, और उनसे बँधा ऊखल आड़ा होकर उनके बीच अटक गया।



महर्षि के वचन को सत्य करने के लिए कृष्ण ऊखल घसीटते हुए धीरे-धीरे दोनों वृक्षों की ओर बढ़ते हैं, जब तक कि वह उनके बीच अटक न जाए (श्लोक 24-26)।

जैसे ही नन्हे दामोदर ने अटके ऊखल को आगे खींचा, दोनों विशाल वृक्ष जड़ से उखड़कर धराशायी हो गए, उनके तने, शाखाएँ और पत्ते उनकी परम शक्ति के स्पर्श से थरथरा उठे, और सारे व्रज में एक भयंकर शब्द गूँज उठा।

बालेन निष्कर्षयतान्वगुलूखलं तद्
दामोदरेण तरसोत्कलिताङ्घ्रिबन्धौ ।
निष्पेततुः परमविक्रमितातिवेप-
स्कन्धप्रवालविटपौ कृतचण्डशब्दौ ॥ २७ ॥



*bālena niṣkarṣayatānvag ulūkhalaṁ tad dāmodareṇa tarasotkalitāṅghri-bandhau niṣpetatuh
parama-vikramitātivepa- skandha-pravāla-viṭapau kṛta-caṇḍa-śabdau*

अर्थ: जैसे बालक ने अटके ऊखल को अपने पीछे खींचा, दामोदर की शक्ति से दोनों वृक्षों की जड़ों के बन्धन उखड़ गए; तनों, शाखाओं और पत्तों को अत्यन्त कँपाते हुए वे दोनों वृक्ष भयंकर शब्द के साथ गिर पड़े। (स्कन्ध 10, अध्याय 10, श्लोक 27)

मुक्त पुरुषों की स्तुति

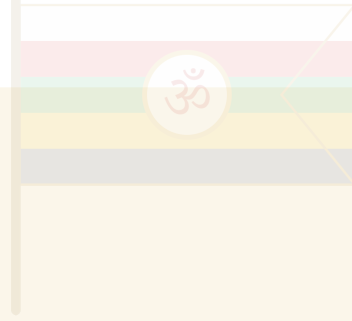
गिरे हुए वृक्षों से दो अत्यन्त तेजस्वी पुरुष प्रकट हुए, जो अग्नि के समान समस्त दिशाओं को प्रकाशित कर रहे थे। ये नलकूवर और मणिग्रीव थे, जो अपने दिव्य रूपों में लौट आए थे और अन्ततः मद के अन्धकार से मुक्त हो गए थे। समस्त लोकों के स्वामी कृष्ण को सिर झुकाकर, हाथ जोड़े और निर्मल हृदय से उन्होंने उनकी स्तुति की: ‘कृष्ण, कृष्ण, हे महायोगी! आप ही आदि परम पुरुष हैं, और ज्ञानीजन इस समस्त व्यक्त-अव्यक्त विश्व को आपका ही रूप जानते हैं। आप ही समस्त प्राणियों के शरीर, इन्द्रिय और मन के स्वामी हैं; आप काल हैं; आप अविनाशी विष्णु हैं; आप ही तीन गुणों से बुनी सूक्ष्म प्रकृति हैं और उसका अधिष्ठाता परम पुरुष भी।’ उन्होंने स्वीकार किया कि गुणों से आवृत कोई भी अपने बल से आपको नहीं जान सकता, और वासुदेव — परम ब्रह्म, जिनकी महिमा उनकी अपनी ज्योति से ढकी है — को उन्होंने प्रणाम किया।



गिरे हुए वृक्षों से नलकूवर और मणिग्रीव अपने दिव्य रूपों में प्रकट होते हैं; अभिमान से मुक्त होकर वे हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं और बालक को परम पुरुष के रूप में स्तुति करते हैं (श्लोक 28-38)।

यह जानकर कि वे समस्त लोकों के कल्याण के लिए अवतरित हुए हैं, उन्होंने वह प्रार्थना की जो हर भक्त की प्रार्थना बन गई है — न धन माँगा, न स्वर्ग, केवल यही कि उनकी प्रत्येक इन्द्रिय उनकी सेवा में लगी रहे।

वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां
हस्तौ च कर्मसु मनस्तव पादयोर्नः ।
स्मृत्यां शिरस्तव निवासजगत्प्रणामे
दृष्टिः सतां दर्शनेऽस्तु भवत्तनूनाम् ॥ ३८ ॥



*vāṇī guṇānukathane śravaṇau kathāyām hastau ca karmasu manas tava pādayor naḥ smṛtyām
śīras tava nivāsa-jagat-praṇāme dṛṣṭiḥ satām darśane 'stu bhavat-tanūnām*

अर्थ: हमारी वाणी आपके गुणों के वर्णन में लगे, हमारे कान आपकी कथा में, हमारे हाथ आपके कार्यों में, हमारा मन आपके चरणों में, हमारी स्मृति आप में, हमारा मस्तक आपके निवास रूप जगत् को प्रणाम में, और हमारी दृष्टि आपके स्वरूप सन्तों के दर्शन में लगी रहे। (स्कन्ध 10, अध्याय 10, श्लोक 38)

कृष्ण का आशीर्वाद और उनका प्रस्थान

इस प्रकार स्तुति किए जाने पर गोकुलेश्वर प्रभु — माँ की रस्सी से अब भी ऊखल में बँधे हुए — हँसे और दोनों से बोले। उन्होंने कहा कि वे पहले से ही जानते थे कि करुणामय देवर्षि नारद के वचन, यद्यपि शाप जैसे सुनाई देते थे, वस्तुतः आशीर्वाद थे; क्योंकि जिनका मन उनमें लगा है, उनके लिए समदर्शी सन्तों का दर्शन ही मुक्ति ले आता है, जैसे सूर्य का प्रकाश नेत्रों को दृष्टि देता है। उनका दीर्घ दण्ड ऋषि की कृपा ही था, जो उन्हें सीधे उनके सान्निध्य तक ले आया।

तद्रच्छतं मत्परमौ नलकूवर सादनम् ।

सज्जातो मयि भावो वामीप्सितः परमोऽभवः ॥ ४२ ॥

tad gacchataṁ mat-paramau nalakūvara sādanam sañjāto mayi bhāvo vām īpsitaḥ paramo 'bhavaḥ

अर्थ: अब घर जाओ, हे नलकूवर, तुम जो मेरे परम भक्त हो; क्योंकि जन्म-मृत्यु से रहित मेरे प्रति वह परम प्रेम, जिसकी तुमने कामना की थी, अब तुम दोनों में जाग उठा है। (स्कन्ध 10, अध्याय 10, श्लोक 42)



ऊखल से बँधे हुए ही मुस्कुराते हुए प्रभु दोनों से कहते हैं कि उनके हृदय में उनके प्रति शुद्ध प्रेम जाग उठा है, और उन्हें घर भेज देते हैं; वे उनकी परिक्रमा कर उत्तर दिशा को प्रस्थान करते हैं (श्लोक 39-43)।

यह सुनकर दोनों ने ऊखल-बद्ध प्रभु की परिक्रमा की और बार-बार प्रणाम किया; फिर विदा लेकर वे उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर गए, उनके हृदय उस भक्ति से परिपूर्ण थे जिसकी वे इतने लम्बे समय से प्रतीक्षा कर रहे थे।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. धन और मद आत्मा को अंधा कर सकते हैं। नारद सिखाते हैं कि धन और कुल का अभिमान, भोग के साथ मिलकर, बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है (श्लोक 8)। जिसे संसार सौभाग्य कहता है, वह चुपचाप सबसे बड़ा दुर्भाग्य बन सकता है।
2. सरलता एक छिपी तपस्या है। ऋषि के वचनों में दरिद्रता अहंकार को झुकाती है, सहानुभूति सिखाती है और हिंसा की वृत्ति को भी शान्त करती है। भगवान् अभिमानी की अपेक्षा सरल जन को सहज ही मिल जाते हैं।
3. सन्त का शाप सन्त की कृपा है। नारद का दण्ड (श्लोक 20-22) वस्तुतः एक उद्धार था, जिसने सौ वर्षों में उनकी मुक्ति की व्यवस्था कर दी। शुद्ध हृदय से आया जो दण्ड जैसा लगता है, वह कृपा का हाथ हो सकता है।

4. भगवान् अपने भक्तों के वचन का मान रखते हैं। कृष्ण नारद के वचन को सत्य करने के लिए वृक्षों को उखाड़ते हैं (श्लोक 24-27)। वे प्रेमियों की इच्छाओं और वचनों से स्वयं को बाँध लेते हैं।

5. सच्ची प्रार्थना केवल सेवा माँगती है। मुक्त पुरुष न धन माँगते हैं न स्वर्ग, केवल यही कि हर इन्द्रिय भगवान् को अर्पित हो (श्लोक 38)। यही शुद्ध भक्ति का स्वरूप है।

एक भक्तिमय चिन्तन

यह उल्लेखनीय है कि वही बालक, जो ऐसी रस्सी से बाँध गया जो कभी उन्हें पूरी तरह घेर न सकी, अब दो विशाल वृक्षों की जड़ों को ऐसे तोड़ देता है मानो वे धागे हों। जो प्रभु माँ के प्रेम के आगे विवश हैं, वही दो अभिमानी आत्माओं के बन्धन के आगे सर्वशक्तिमान् हैं। और उन्हें मुक्त करती है केवल वृक्षों का गिरना नहीं, अपितु एक सन्त के कठोर वचनों में छिपी वह दीर्घ, धैर्यमयी कृपा। नारद ने नलकूवर और मणिग्रीव को क्रोध में शाप नहीं दिया; उन्होंने उन्हें इतना प्रेम किया कि उनका सब कुछ छीन लिया जो उन्हें नष्ट कर रहा था — उनका धन, उनके शरीर, उनका अभिमान — और सौ वर्षों में उनका भगवान् से मिलन रच दिया। ऐसी कृपा को हम प्रायः तब नहीं पहचान पाते जब वह हानि के रूप में हमारे पास आती है। किन्तु यह अध्याय हमसे धीरे से कहता है कि जो हाथ हमारा अभिमान छीनता है, वही हाथ हमें घर की ओर खींच रहा हो सकता है, और प्रार्थना करने योग्य बात खोई वस्तु की वापसी नहीं, अपितु यह है कि हमारा प्रत्येक अंग अन्ततः उन्हीं की ओर मुड़ जाए।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज उन दो मुक्त पुरुषों की प्रार्थना को हृदय में धारण करें: अपनी प्रत्येक इन्द्रिय को एक-एक कर भगवान् को अर्पित करें। आपकी वाणी उन्हीं की चर्चा करे, आपके कान उन्हीं की कथा खोजें, आपके हाथ उनके नाम पर दूसरों की सेवा करें, और आपका मन उनके चरणों में विश्राम पाए। जहाँ धन, पद या ज्ञान का अभिमान दिखे, उसे धीरे से त्याग दें, यह स्मरण करते हुए कि भगवान् विनम्र के निकट आते हैं। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह दसवाँ अध्याय एक कठोर उपदेश को एक कोमल लीला से जोड़ता है। कुबेर के दो अभिमानी पुत्रों की कथा से नारद दिखाते हैं कि धन और मद आत्मा को कैसे अंधा कर देते हैं और सरलता कैसे नेत्र खोल देती है; और अपने शाप से, जो वस्तुतः आशीर्वाद था, वे स्वयं भगवान् के हाथों उनके उद्धार की व्यवस्था करते हैं। माँ के द्वारा ऊखल में बाँधे बालक कृष्ण दोनों वृक्षों के बीच से निकलते हैं, उन्हें ऐसे शब्द के साथ उखाड़ देते हैं जो सारे व्रज को हिला देता है, और चिरकाल से बन्दी दो पुरुषों को मुक्त कर देते हैं। विनम्र और पुनर्स्थापित होकर वे शुद्धतम प्रार्थना अर्पित करते हैं और अन्ततः जागी हुई भक्ति के साथ प्रस्थान करते हैं। हम भी उनसे सीखें कि जो कुछ हमारा अभिमान छीने उसका स्वागत करें, अपनी हानियों में छिपी कृपा पर विश्वास करें, और सबसे बढ़कर यही माँगें कि हमारी प्रत्येक शक्ति भगवान् की प्रेममयी सेवा में लग जाए।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), दशम अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-10-deliverance-of-the-two-trees-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट